Course – B.A Education Hons, part II
Paper – III Educational Psychology & Pedagogy
Topic – Adolescence
prepared by – Dr. Sangeeta Kumari

इकाई : 15 : किशोरावस्था
unit 15 : ADOLESCENCE

15.1 किशोरावस्था का अर्थ (Meaning of Adolescence) :–

बाल्यावस्था तथा वयस्कावस्था के बीच परिवर्तन अवधि को किशोरावस्था कहते हैं। बाल्यावस्था 12 वर्ष तक समाप्त हो जाती है और वयस्कावस्था 20 वर्ष की आयु से आरम्भ होती है। अतः 13 साल से 19 साल की अवधि को किशोरावस्था कहा जाता है।

रेबर तथा रेबर (Reber and Reber, 2001) के अनुसार,

"किशोरावस्था विकास की वह अवधि है जो आरंभ में तारुण्य के प्रारंभ द्वारा और अन्त में शारीरिक या मनोवैज्ञानिक प्रौढ़ता की प्राप्ति द्वारा चिह्नित होती है।"

15.2 किशोरावस्था की विशेषताएँ (Characteristics of Adolescence)

(1) मनोवैज्ञानिक विकास :- (Psychological development)

किशोरावस्था की अवधि में मनोवैज्ञानिक परिपक्वता की विशेषता भी पाई जाती है। मनोवैज्ञानिक परिपक्वता का तात्पर्य संवेगात्मक, सामाजिक तथा बौद्धिक परिपक्वता से है।

(2) शारीरिक विकास :- (Physical development)

किशोरावस्था की अवधि का गहरा सम्बन्ध शारीरिक परिपक्वता से होता है। इस अवधि में कई तरह के शारीरिक परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। लड़की तथा लड़का की शारीरिक परिपक्वता की दर में अन्तर होता है।

(3) पारगमन अवधि (Transition period) :–

किशोरावस्था की एक मुख्य विशेषता

यह है कि यह पारगमन अवधि होती है। कारण इस अवधि के दौरान व्यक्ति न तो बालक होता है और न ही वयस्क होता है।

(4) संज्ञानात्मक योग्यताएँ (cognitive abilities)

इस अवस्था में अन्य परिवर्तन के साथ-साथ मस्तिष्क तथा इसके कार्य में भी परिवर्तन घटित होते हैं, जिसका प्रभाव बौद्धिक योग्यता के विकास पर पड़ता है। इसमें परिवर्तन समय-समय पर देखे जाते हैं।

(5) परावर्तकता (Reflectivity) :-

प्रारंभिक किशोरावस्था की एक पहचान या विशिष्टता परावर्तकता कहलाती है। इसका अर्थ यह है कि किशोर लड़के तथा लड़कियाँ अपने सम्बन्ध में अधिक चिन्तन करते हैं तथा अपने स्व का अध्ययन अधिक करते हैं। वे इस बात को समझने लगते हैं कि वे जो कुछ सोचते हैं, अनुभव करते हैं और जैसा व्यवहार करते हैं उनमें स्पष्ट भिन्नता दीख पड़ती है।

(6) अहम् तादात्म्य (ego identity) :-

किशोरावस्था में किशोर अपनी अलग पहचान बना लेते हैं जिसे अहम् तादात्म्य कहते हैं। किशोर व्यक्ति में यह बोध विकसित हो जाता है कि उसकी अपनी वैयक्तिकता है। वह समझने लगता है कि वह अपने भविष्य को स्वयं बना सकता है।

(7) स्वायत्तता (Autonomy) :-

किशोरावस्था के विकास के क्रम में लड़कों तथा लड़कियों में स्वायत्तता तथा आत्म निश्चय की आवश्यकता बढ़ती जाती है। जैसे-जैसे वयस्कों से समानता का बोध और विश्लेषण तथा योजना करने की योग्यता में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे वयस्कों के आदेश को स्वीकार करना उनके लिए कठिन बनता जाता है।

Scanned with CamScanner

(9) अनुपालन (Conformity):-

किशोर में स्वायत्तता के साथ-साथ अनुपालन की विशेषता भी पायी जाती है। एक ओर वे अपने माता-पिता तथा अन्य वयस्कों में स्वायत्तता के इच्छुक होते हैं और दूसरी ओर अपने अभिजात समूह का अनुपालन करते हैं। 11 साल से 13 साल की आयु में समूह दबाव अधिकतम होता है।

(9) अन्तर्वैयक्तिक विकास (Interpersonal development):-

इस अवस्था की मुख्य विशेषता अन्तर्वैयक्तिक विकास है। माता-पिता तथा शिक्षकों के आतंक के बावजूद किशोरों के लिए अभिजात समूह ही ध्यान केन्द्र होता है। उनका अधिकांश समय तथा शक्ति अभिजातों के साथ मित्रता, लोकप्रियता तथा संघर्ष के अतिरिक्त यौन सम्बन्धों को बनाने तथा निभाने में खर्च होते हैं।

(10) मूल्य तन्त्र (Value system)

प्रारंभिक किशोरों का मूल्य-तंत्र बहुत हद तक उनके माता-पिता के मूल्य-तंत्रों के समान होता है। लेकिन अभिजात समूह के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण किशोरों में जिस मूल्य तंत्र का विकास होता है, वह अभिजात समूह के मूल्य तंत्र से अभिन्न तथा माता-पिता के मूल्य-तंत्र से भिन्न होता है। मध्य किशोरावस्था में किशोर लड़के तथा लड़कियाँ अपने माता-पिता की कमजोरियों को लक्ष नहीं कर पाते हैं और परिणामस्वरूप दोनों के बीच बन्धन कमजोर हो जाता है।

(11) लिंगीय विकास (Sexual development):-

किशोरावस्था में यौन इच्छा फिर से जाग्रत हो जाती है और तीव्र बन जाती है।

Scanned with CamScanner

15.3 किशोरावस्था की समस्याएँ (Problems of Adolescence)

(1) संवेगात्मक समस्याएँ (Emotional Problems) :-

किशोरों में कई तरह की संवेगात्मक समस्याएँ पायी जाती है। इसका मुख्य कारण उनके शरीर में होने वाले परिवर्तन है जो नाटकीय ढंग से तीव्र गति से घटित होते हैं। किशोरावस्था में साधारण से गंभीर संवेगात्मक विकृतियाँ उत्पन्न होती है। ये विकृतियाँ विषाद से तीव्र चिन्ता के रूप में उत्पन्न हो सकती है।

(2) सामाजिक समस्याएँ (Social Problems) :-

किशोरावस्था में लड़के तथा लड़कियों को कई तरह की सामाजिक समस्याओं से जूझना पड़ता है। इस अवस्था में लड़के तथा लड़कियों में स्वायत्तता का भाव अधिक प्रबल रहता है। वे अपने माता-पिता के बन्धन से मुक्त होना चाहते हैं। इस कारण से माता-पिता तथा परिवार के अन्य वयस्कों के साथ उनका सामाजिक सम्बन्ध तनावपूर्ण बन जाता है। बहुत से परम्परागत मूल्यों को वे छोड़ते लगते हैं तथा अभिजात समूह के प्रभाव से नए-नए मूल्यों को अर्जित कर लेते हैं। इस कारण परिवार में उनका समायोजन बिगड़ जाता है।

(3) शैक्षिक समस्याएँ (Educational Problems) :-

उत्तरकालीन किशोरावस्था में लड़के तथा लड़कियाँ कॉलेज जीवन में प्रवेश कर जाते हैं जहाँ उन्हें शिक्षा से सम्बन्धित कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विशेष रूप से परीक्षा, श्रेणी तथा विषय के चयन से सम्बन्धित प्रतिबल का उन्हें सामना करना पड़ता है। अध्ययन विषय के चयन में एक ओर माता-पिता के दबाव और दूसरी शिक्षक की सलाह एवं अभिजात समूह के साथ अनुपालन से उत्पन्न द्वन्द्व के वे शिकार बन जाते हैं। इसी प्रकार परीक्षा में शानदार सफलता प्राप्त करने की माता-पिता की अपेक्षा को पूरा करने की असफलता के भय से उत्पन्न चिन्ता तथा द्वन्द्व से वे पीड़ित हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(a) लिंगीय समस्याएँ (Sexual Problems):-
किशोरावस्था की अवधि में शारीरिक परिपक्वता के कारण उनके यौन अंग विकसित हो जाते हैं, जिससे लिंगीय उत्सुकता तीव्र बन जाती है। लेकिन उनमें मनोवैज्ञानिक परिपक्वता की अभी भी कमी होती है जिसके कारण वे अपनी यौन उत्सुकता को नियंत्रित नहीं कर पाते हैं। माता-पिता के बन्धन से स्वतंत्र होकर वे किशोर तथा किशोरियाँ स्वायत्तता के नाम पर आपस में खुलकर मिलते हैं।

(b) समायोजन समस्याएँ (Adjustment Problems):-
किशोरों को प्रायः पारिवारिक समायोजन समस्या का सामना करना होता है। किशोरों का सम्बन्ध अपने माता-पिता तथा परिवार के अन्य वयस्कों के साथ पूर्ववत् नहीं रह पाता है, जिससे उनके पारिवारिक समायोजन में बिगाड़ आ जाता है।
किशोर लड़के तथा लड़कियों के साथ इससे बड़ी समस्या है कि वे समाज के परम्परागत मूल्यों एवं विश्वासों को नहीं मानते हैं जिससे उन्हें समाज के साथ समायोजन करने में कठिनाई होती है। किशोरों का स्वास्थ्य समायोजन भी सामान्य नहीं रह पाता है।

(c) औषध तथा मादक दुरुपयोग (Drug and Alcohol Abuse)
वर्तमान समय में किशोरों में औषध तथा मादक का इस्तेमाल काफी बढ़ गया है।

(d) अपराध की समस्या (Problem of delinquency):-
किशोरावस्था की एक गंभीर समस्या बढ़ते हुए अपराध की समस्या है। किशोरियों की अपेक्षा किशोरों में अपराधी व्यवहार में अधिक देखा जाता है।

(e) आर्थिक समस्याएँ (Economic Problems):-
किशोरों में कई तरह की आर्थिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। स्वायत्तता की आवश्यकता को पूरा करने के चक्कर में उनका सम्बन्ध माता-पिता से बिगड़ जाता है, जिससे वित्तीय सहायता बाधित होने लगती है।

Scanned with CamScanner

(7) मानसिक स्वास्थ्य की समस्या (Problem of mental health)
किशोरावस्था में लड़कों तथा लड़कियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य एक समस्या बन कर रह जाता है। वे नाना प्रकार के प्रतिबलों से पीड़ित होने के कारण मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं रह पाते हैं।

15.4 अभ्यास के प्रश्न (Question for Exercise)

Q1. Define adolescence. Describe the characteristics of adolescence.
किशोरावस्था को परिभाषित कीजिए। किशोरावस्था की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Q2 Describe the problem of adolescence.
किशोरावस्था की समस्याओं का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner